कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

(सकल विश्व को श्रेष्ठ बनाओ)

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन सार्वदेशिक सभा दिल्ली के तत्वावधान में

४,५,६,७ सितम्बर २००८ मॉरीशस की राजधानी - पोरलुई में

आर्य सभा मॉरीशस : एक परिचय

महर्षि दयानन्द के अमर ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश ने मॉरीशस में आर्यसमाज का बीजारोपण किया । यह एक शती पूर्व की बात है । स्वनामधन्य श्री खेमलाल लाला ने सत्यार्थप्रकाश की ज्योति से ज्योतित होकर क्यूर्पिप रोड में सन् १९०३ में आर्यसमाज की स्थापना की । उनके साथी थे -- श्री गुरुप्रसाद दलजीतलाल जी एवं श्री जगमोहन जी गोपाल । ये पुरुषत्रय क्रमशः मॉरीशसीय आर्यसमाज के प्रथम प्रधान, मन्त्री और कोषाध्यक्ष बने । इन्हें आर्यसमाज को गतिशील बनाने में अपूर्व तप-त्याग करना पड़ा । इस अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन के पावन अवसर पर इन्हें हमारे श्रद्धा-सुमन समर्पित हैं ।

आज इस देश में आर्य सभा एक छविमान संस्था मानी जाती है । यहाँ तक पहुँचने में इस सभा को विकट समस्याओं का सामना करना पड़ा है । और तो और आर्य सभा तक पहुँचने के लिए आर्यसमाज को सात बार जन्म लेना पड़ा है ।

प्रथम स्थापना क्यूर्पिप रोड में वर्तमान निरधिन भवन के स्थल पर हुई थी। सन् १९०७ में द्वितीय स्थापना क्यूर्पिप रोड में ही हुई । तृतीय स्थापना पहली अप्रैल सन् १९१० में एक बार और क्यूर्पिप रोड में हुई । सात महीने का जीवन जीकर यह समाज भी काल के गाल में समा गया ।

८ मई १९११ ई० को पोर्टलुई में मणिलाल मगनलाल डाक्टर की उपस्थिति में चौथी बार 'आर्य प्रतिनिधि सभा' की स्थापना हुई ।

१० नवम्बर १९१३ को औपचारिक रूप से डाक्टर चिरंजीव भारद्वाज ने आर्य परोपकारिणी सभा की स्थापना की और इसका पंजीकरण किया।

सन् १९२७ में एक बार और 'आर्य प्रतिनिधि सभा' का जन्म हुआ । यह सभा सन् १९५० तक गतिशील रही । इसी वर्ष स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज दोबारा मॉरीशस पधारे । इस देश में आर्यसमाज के मन्तव्यों का प्रचार करने वाली दो सभाओं को देखकर उन्हें बड़ी ग्लानि हुई । उन्होंने दोनों सभाओं के अधिकारियों को समझाया-बुझाया । उनके सद्प्रयास से आर्य परोपकारिणी सभा और 'आर्य प्रतिनिधि सभा' का एकीकरण हुआ और 'आर्य सभा' ने जन्म लिया ।

इस सभा ने केवल चार वर्ष का जीवन प्राप्त किया । सन् १९५४ में पुनः आर्य प्रतिनिधि सभा की स्थापना की गई ।

सन् १९५७ में स्वामी ध्रुवानन्द जी महाराज का इस देश में पदार्पण हुआ। उन्होंने 'आर्य परोपकारिणी सभा' और 'आर्य प्रतिनिधि सभा' का विलय करके 'आर्य सभा' की पुनर्स्थापना की । इस कार्य को पूरा करने में उन्हें भगीरथ परिश्रम करना पड़ा ।

सन् १९५७ से आर्य सभा कार्यरत है। इसने हिन्दुओं के प्रति उपकार करने में कोई कसर बाकी नहीं छोड़ी है।